Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2021 SHISRRJ | Volume 4 | Issue 2 | ISSN : 2581- 6306

वैदिक वाङ्मय में सप्तसैन्धव प्रदेश और गंगा

डॉ.बी बी त्रिपाठी,
शोध निर्देशक, राजकीय महिला महाविद्यालय, झाँसी (उत्तर प्रदेश)

गौरी
शोधच्छात्रा, संस्कृत विभाग, नेहरू महाविद्यालय ललितपुर बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी (उत्तर प्रदेश)

Article Info
Volume 4, Issue 2
Page Number : 169-173
Publication Issue :
March-April-2021
Article History
Accepted : 01 April 2021
Published : 10 April 2021

शोध सार – रुद्रप्रयाग से मन्दाकिनी और अलकनन्दा का पवित्र जल जब और आगे बढ़ता है तो वह अनेक प्रयागों का स्पर्श करता हुआ उस देवप्रयाग में पहुँचता है, जहाँ जह्नुसुता जाह्नवी अलकनन्दा के जल का स्पर्श करते ही संयुक्त रूपा गंगा में विलीन हो जाती हैं।

मुख्य शब्द – वैदिक, वाङ्मय, सप्तसैन्धव, गंगा, संस्कृत, साहित्य, ऋग्वेद।

ऋग्वेद आर्यों का वह पवित्र ग्रन्थ है जिसमें कि उनके उत्थान की ऐतिहासिकता पर दृष्टिपात किया गया है। यह वही पवित्र ग्रन्थ है जिसमें ऋग्वैदिक कालीन धर्म भाषा, संस्कृति, राजनीति, भूगोल, समाज, व्यवस्था आदि विषयों पर विस्तार से चर्चा हुई है इसलिए इसे विज्ञान एवं ज्ञान का अमरकोष भी माना जाता है वेदों की निर्माणस्थली सप्तसिन्धु स्वीकारी जाती है। यह सप्तसिन्धु प्रदेश कहाँ है इस पर विद्वानों का मतैक्य नहीं है। कोई इसे पंजाब कहता है, तो कोई हिमालय का केदारखण्ड प्रदेश, लेकिन सप्तसिन्धु का अर्थ पंजाब नहीं बल्कि वह प्रदेश है जहाँ वैदिककालीन सात नदियाँ प्रवाहित होती हैं। इस विषय में गढ़वाल के एक प्रसिद्ध इतिहासकार श्री भजन सिंह का मत है कि जिस पंजाब में सिन्धु के अतिरिक्त ऋग्वेद में वर्णित नाम की एक भी नदी नहीं है, उसे बलपूर्वक आर्यों का आदि देश घोषित करना तथा जिस प्रदेश में सरस्वती, गंगा, यमुना, गोमती, सरयू एवं मन्दाकिनी आदि नदियाँ अपने मूल ऋग्वैदिक नाम से पूर्ववत् प्रवाहित हैं। उसे आर्यों का मूल स्थान न कहना दृढ़ और दुराग्रह नहीं तो क्या है? पंचनद (पंजाब) का आर्यों को आदि देश प्रमाणित करने के लिए गंगा, यमुना, सरस्वती, सरयू और मन्दाकिनी आदि वास्तविक नदियों को नगण्य एवं पक्षिप्त बताकर इसका

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

ऋग्वैदिक महत्त्व कम करना, भूगोल एवं इतिहास की वास्तविकता के प्रति जानबूझकर आँख बन्द करना नहीं तो क्या है।

आर्यों का आदि निवास मध्यहिमालय श्री भजन सिंह के अनुसार सप्तसिंधु में प्रवाहित होने वाली सात नदियाँ हैं जो गंगा, यमुना, सरस्वती, गोमती, सरयू, मंदाकिनी और नयार ये सभी नदियाँ उत्तराखण्ड की पावन धरती में बहती हैं इसलिए गढ़वाल ही वह सप्तसिन्धु देश है जहाँ वेदों का निर्माण हुआ था।

वास्तव में प्राचीन काल की परम्परा के अनुसार पंजाब हो चाहे सप्तसिन्धवः सभी नाम नदियों की संख्या के आधार पर किए गये जाते थे। सप्तसिन्धु ही आर्यों का वह पवित्र क्षेत्र था, जिसमें कि वेदों की रचना हुई है। ऋग्वेद के गहन अध्ययन और चिन्तन के फलस्वरूप इसकी विषय सामग्री के मध्य में भारतवर्ष को जिन पवित्र नदियों का उल्लेख मिलता है वे इस प्रकार हैं–

दिवि सोमो अधिश्रितः।[1]

सोम एक दिव्य तेजःपुंज है। ऋग्वेद में ऐसा कहा गया है।

स नो हरीणां पत इन्दो देवप्सरस्तमः। सखेव सख्ये नर्यो रूचे भव।।[2]

अर्थात् आकाश से यह सोम पृथ्वी में पर्वतों के ऊपर औषधियों एवं जलों में (जो जलगण औषधीय पदार्थों के ऊपर जमा रहता है) स्थित हो गया है।

त्वं च सोम नो वशो जीवातुं न मरायहे प्रियस्तोत्रो वनस्पतिः।[3]

अर्थात् यह मनुष्य के दीर्घ जीवन के लिए प्रशंसनीय औषधिरूप है। जिसकी अनुकूलता से मनुष्य आरोग्य प्राप्त करता है।

जनयन्रोचना दिवो जनयन्नप्सु सूर्यम्। वसानो गा अपो हरिः।।[4]

वेद में सोम को औषधियों का राजा **'सोमो ओषधीनां राजा'** कहा गया है। सोम का पर्यायवाची चन्द्रमा है, वास्तव में सोम और चन्द्रमा एक ही हैं। सृष्टि–सृजन के लिए प्रजापति महर्षि अत्रि ने ब्रह्म का ध्यान किया तो ब्रह्मलोक से एक तेजःपुंज का आविर्भाव हुआ, जिसे दसों दिशाओं ने गर्भ के रूप में धारण किया, लेकिन वे पूरे तेज को धारण नहीं कर पाए, उसका कुछ भाग वनस्पतियों पर गिरा, जिससे वनस्पतियों में सोमत्व का सृजन हुआ। इसलिए चन्द्रमा को सोम और सोम को चन्द्रमा भी कहते हैं। यही कारण है कि औषधियों को (सोम को) निकालते समय नक्षत्रों का बहुत ध्यान रखा जाता था, क्योंकि नक्षत्रों का अधिपति चन्द्रमा है और चन्द्रमा को मास के अन्दर 27 नक्षत्रों के साथ सहवास करना होता है। जब चन्द्रमा जिस नक्षत्र में होता है तब उस नक्षत्र से सम्बन्धित वनस्पति में सोमत्व का सृजन होता है और उसी नक्षत्र में निकाले जाने पर उस वनस्पति में सोमत्व रहता है अन्यथा नहीं।

ऋग्वेद में वर्णित उपर्युक्त नदियों में गंगा, यमुना और सरस्वती मुख्य नदियाँ जो सप्तसिन्धु देश को शस्यश्यामल बनाती थीं, उपर्युक्त सरिताओं में कई ऐसी सरिताएँ हैं जो आज भी गंगा की सहायक नदियाँ उच्च हिमालय पर्वत मालाओं से निकलकर गंगा में विलीन हो जाती हैं, ये यहाँ पर गंगा में मिलती हैं वहाँ इनके पवित्र संगम स्थल को प्रयाग की संज्ञा दी जाती है।

उदीची दिक् सोमोऽधिपतिः।[5]

अर्थात् सोम उत्तर दिशा के अधिपति हैं तथा सोम को पृथ्वी के नाभिस्थल पर स्थित पर्वतों (मेरू जो कि गंगा की धाराओं का उद्गम है)– का निवासी बतलाया गया है। यही बात सामवेद में भी कही गई है।

या ओषधयः सोमराज्ञीर्बह्वीः शतविचक्षणाः।[6]

जो सैकड़ों प्रकार की औषधियाँ हैं, उनमें सोम का निवास है।

प्र सोमासो विपश्चितोऽपो नयन्त ऊर्मयः। वनानि महिषा इव।।[7]

जलाशयों में जिस प्रकार लहरें समाहित होती हैं, उसी प्रकार यह ज्ञानवर्धक सोमरस जल के साथ मिल जाता है, जिसमें मेधावर्धक विशिष्ट ज्ञानसम्पन्न दिन ऊषा एवं द्युलोक का ज्ञाता तन्त्रिकाओं में चेतना का संचार करने वाला और विद्वानों के लिए उपयेागी होता है।

हिमवतः प्र स्त्रवन्ति सिन्धौ सयह संगमः।

आपो ह मह्यं तद् देवीर्ददन् हृद्द्योतभेषजम्।।[8]

हिमाच्छादित पर्वतों की जो सोमरूपी जलधाराएँ बहती हुई समुद्र की ओर प्रस्थान करती हैं, वे रोगनाशक अमृतमय औषधीय जलधाराएँ हृदय को शान्ति प्रदान करने वाली हैं। ऐसी जलधाराओं का वैदिक ऋषि आवाह्न करते हैं–

सस्त्रुषीस्तदपसो दिवा नक्तं च सस्त्रुषीः। वरेण्यक्रतुरहमपो देवीरूप ह्वये।।

ओता आपः कर्मण्या मु×चन्तिः प्रणीतये। सद्यः कृण्वत्तेतवे।।[9]

अर्थात् हम श्रेष्ठ कर्म करने वाले निरन्तर गतिमान् जलधाराओं में प्रवाहित दिव्य आपः (मूल तत्त्व जल अथवा सोम) का आवाह्न करते हैं। ये सर्वत्र व्याप्त निरन्तर गतिमान् जलधाराओं की क्रिया–शक्ति उत्पन्न करके हमें इनमें (रोगों अथवा हीनता से) मुक्त करें, हम शीघ्र प्रगति करें और –

शं नो भवन्त्वय ओषधयः शिवाः।[10]

कल्याणकारी औषधियाँ, गुणयुक्त जल हमारे लिए पापक्षयकारी और कल्याणकारी सिद्ध हों। इस प्रकार सोमयुक्त जल से आरोग्य की प्रार्थना की गई है।

सिन्धुपत्नीः सिन्धुराज्ञी सर्वा या नद्य स्थन।

दत्त नस्तस्य भेषजं तेना वो भुनजामहै।।[11]

अर्थात् आप सिन्धु (गंगा) की पत्नियाँ हैं, सिन्धु आपका सम्राट है, हे निरन्तर बहती जलधाराओं! आप हमें पीड़ा से मुक्त करें और आरोग्य प्रदान करें, जिससे हम अन्न, बल आदि का उपभोग कर सकें। यहाँ सिन्धु का अर्थ समुद्र से है। आर्य लोग गंगा को सिन्धु कहते थे, क्योंकि सिन्धु का अर्थ समुद्र होता हैं वैदिक काल में गंगा में अथाह जल था और इसी जलाधिक्य के कारण गंगा को सिन्धु कहते थे। इसकी सात अन्य शाखाएँ हैं, इन शाखाओं में भी अत्यधिक जल था। अतः इन्हें भी आर्य लोग सिन्धु का ही दर्जा देते थे। इसलिए उत्तराखण्ड को सप्तसिन्धु भी कहा जाता है।

न त्वा तरन्त्योषधयो बाह्याः पर्वतीया उत।।[12]

पर्वतों से भिन्न स्थनों पर उत्पन्न होने वाली औषधियाँ कम लाभप्रद होती हैं इसलिए वैदिक ऋषि हिमालय की इन औषधियों की स्तुति करते हैं।

मधुमतीरोषधीर्घाव आपो मनुमन्नो भवत्वन्तरिक्षम्।[13]

वनौषधियाँ हमारे लिए मधुरता से पूर्ण हों तथा द्युलोक, अन्तरिक्ष और जल हमारे लिए मधुर हों।

एषां भूतानां पृथिवी रसः पृथिव्या आपो रसोऽपामोषधयो रसः।।[14]

अर्थात् इन चराचर प्राणियों पृथिवी रस, उत्पत्ति, स्थिति और लय का स्थान है।

पृथिवी का रस जल है और जल का रस औषधियाँ हैं, क्योंकि जल औषधियों का ही परिणाम है। हिमालय में जल विभिन्न जड़ी–बूटियों में समाकर निःसृत होता है, इसलिए औषधियुक्त जल ही गंगाजल है।

हिमालय में अत्यधिक प्रभावकारी औषधियाँ उत्पन्न होती है। जिनसे कुष्ठरोग–जैसी असाध्य बीमारियाँ भी दूर हो जाती हैं। कुष्ठतक्मनाशन सूक्त– (अथर्व 5/4)– में इसका व्यापक वर्णन आया है। ऐसे औषधीय तत्त्वों से निःसृत होने वाले गंगा जल में जब व्यक्ति स्नान करते हैं तो उनके कुष्ठ जैसे जघन्य रोग भी दूर हो जाते हैं। ऐसा अमृतोपम जल ही सोमरस है। यह सोमयुक्त जल दिव्य प्रभावों वाला भी है। सुरक्षा सूक्त में आया है कि–

अपस्त ओषधीयतीर्ऋच्छन्तु । ये माद्यायव एतस्या दिशोऽभिदासात्।।[15]

जो शत्रु किसी भी दिशा से आकर हमारा विनाश करना चाहते हैं, वे इस औषधिमय जल से विनष्ट हों। इसलिए हर पूजा–पाठ एवं अनुष्ठान में सोमयुक्त गंगाजल का प्रयोग किया जाता है। इसलिए भी सोमरस है गंगाजल।

यजुर्वेद में उल्लेख आया है कि–

सं वपामि समाप ओषधीभिः समोषधयो रसेन।

सं रेवतीर्जगतीभिः पृच्यन्ता सं मधुमती–र्मधुमतीभिः पृच्यन्ताम्।।[16]

अर्थात् सोम औषधियों को जल प्राप्त हो, वे रस से पुष्ट हों, गुणसम्पन्न सोम की औषधियाँ प्रवहमान जल में मिलें। मधुरतायुक्त तत्त्व परस्पर मिल जाएँ। इस प्रकार पर्वतों की औषधियों से निःसृत होकर जो रस जाता है, सह सोमरस ही गंगाजल है।

गंगा की इन वैदिक नदियों का अस्तित्व आज भी ज्यों का त्यों है यही सब नदियाँ मिलकर देवप्रयाग से गंगा का रूप धारण कर लेती है। वैदिककालीन सरस्वती वर्तमान में केशवप्रयाग (माण–मनुप्रदेश) में अलकनन्दा में संगम करके अलकनन्दा का रूप धारण कर लेती है जो कि विष्णु प्रयाग में श्वेता (धवला–धौली) से संगम करती है यही अलकनन्दा जब कई किलोमीटर आगे की ओर प्रवाहित होती है तो इसमें वही वैदिक नदी रसा नन्दप्रयाग में संगम करती है जो वर्तमान में मन्दाकिनी कहलाती है। यह मन्दाकिनी सरिता गढवाल की वह विश्वप्रसिद्ध नदी है जो कि नन्दादेवी पर्वतश्रृंखला से निकलती है और इसी नन्दादेवी पर्वतश्रृंखला पर भगवती नन्दा का निवास माना जाता है जिसकी राजयात्रा में बारह वर्षों के अन्तराल में देश–विदेश के असंख्य तीर्थयात्री और श्रृद्धालु आते हैं, नन्दप्रयाग से अलकनन्दा जब आगे बढ़ती है तो कर्णप्रयाग में उसमें वह पवित्र नदी पिण्डर में संगम करती है जिसका ऋग्वैदिक नाम क्रमु है। क्रमु जल को अपने में विलीन करती भगवती अलकनन्दा रुद्रप्रयाग पहुँचती है तो वहीं गढ़वाल की वह प्रसिद्ध नदी मन्दाकिनी आकर इसके जल को और भी पवित्र कर देती है। जो केदारनाथ जी के श्री चरणों का प्रक्षालन कर अपने संग कुंकुम, केशर, चन्दन और तुलसी की सुगन्धि लाती है, यह मन्दाकिनी नदी वैदिक कुम्भ नदी है, जिसमें कि सरस्वती और जाह्नवी नामक वे दो पवित्र सरिताएँ मिलती हैं जिनके पवित्र जल से तर्पण जल प्राप्त कर हिन्दुओं के असंख्य पितृ तर जाते हैं। इसी नदी के तट पर सोनप्रयाग है जहाँ पर कि त्रियुगीनारायण की पवित्र गंगा मन्दाकिनी में संगम करती हैं। रुद्रप्रयाग से मन्दाकिनी और अलकनन्दा का पवित्र जल जब और आगे बढ़ता है तो वह अनेक प्रयागों का स्पर्श करता हुआ उस देवप्रयाग में पहुँचता है, जहाँ जह्नुसुता जाह्नवी अलकनन्दा के जल का स्पर्श करते ही संयुक्त रूपा गंगा में विलीन हो जाती हैं।

सन्दर्भ सूची–

1. ऋग्वेद 10/85/1
2. ऋग्वेद 9/105/5
3. ऋग्वेद 1/91/6
4. ऋग्वेद 9/42/1
5. अथर्ववेद 3/27/4
6. अथर्ववेद 6/96/1
7. सामवेद 5/1/7, 9
8. सामवेद 2/6/1
9. अथर्ववेद 6/24/1
10. अथर्ववेद 6/26 /1–2
11. अथर्ववेद 2/3/6
12. अथर्ववेद 6/24/3
13. अथर्ववेद 19/44/6
14. अथर्ववेद 20/43/8
15. अथर्ववेद 19/18/6
16. यजुर्वेद 1/21